पाठ-2 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (MODULE-2)

गत अंक से आगे **काव्यांश – 3**

बिहसि लखनु ---------- बान कुठारा ॥
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर ॥
(क्षितिज भाग-2 , पृष्ठ सं. 13)

शब्दार्थ :- बिहसि–हँसकर । मृदु–कोमल । कुठारु-कुल्हाड़ी । कुम्हड़बतिया-काशीफल का छोटा-सा फल / निर्बल । तरजनी-अँगूठे के पास की प्रथम अँगुली । सरासन-धनुष। बिलोकी-देखकर । सहौं-सहन कर रहा हूँ । सूराई-वीरता । अपकीरति-अपयश,बुराई ।सरोष-क्रोध सहित । गिरा-वाणी।

काव्यांश – 4

कौसिक सुनहु ---------- न पावहु सोभा ॥
सूर समर करनी करहि कहि न जनावहि आपु ।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥

(क्षितिज भाग-2 , पृष्ठ सं. 13)

शब्दार्थ :- कौसिक-विश्वामित्र । कुटिलु-कठोर,टेढ़ा । घालकु-नाश करने वाला । निरंकुसु-स्वछंद । असंकूनि-निर्भीक । खोरि-दोष । हटकहु-रोकें । अछत-छोड़कर । दुसह-असहनीय दुख । अछोभा-क्रोध रहित । समर-युद्ध । जनावहि-प्रकट करते हैं । कायर-डरपोक । कथहिं- कहते हैं ।

विशेष

1. अवधि भाषा का सुन्दर प्रयोग किया गया है ।
2. कथात्मक , संवादात्मक तथा व्यंग्यात्मक शैलियों का सामंजस्य रचना को प्रभावी बनता है ।
3. रचनागत सौंदर्य :-
   काव्यांशों में अनुप्रास , पुनरुक्ति प्रकाश ,
   उपमा - कोटि कुलिस सम बचनु तम्हारा
   रूपक – भानुबंस राकेस कलंकू ।
   मानवीकरण – कालकवलु होइहि छन माहीं ।
. आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया गया है ।
. वर्णन की दृष्टि से कवि का कौशल अत्यंत सुन्दर है ।